



## कहानी

# मोनू बंदर की शरारत

बहुत समय पहले एक घने जंगल के किनारे एक छोटा-सा सुंदर गाँव था। उस जंगल में तरह-तरह के जानवर रहते थे—हिरण, खरगोश, लोमड़ी, हाथी और बंदरों का एक बड़ा झुंड। उन्हीं बंदरों में एक नटखट लेकिन बहुत होशियार बंदर था, जिसका नाम मोनू था। मोनू को नई-नई चीजें खोजने का बहुत शौक था। वह दिनभर पेड़ों से कुदता-फांदता और जंगल के अलग-अलग हिस्सों में घूमता रहता था। एक दिन सुबह-सुबह वह जंगल के किनारे वाले रास्ते पर पहुँच गया। अचानक उसकी नजर एक चमचमाती पीतल की घंटी पर पड़ी। शायद किसी यात्री की गाड़ी से गिर गई थी। मोनू ने उत्सुकता से उसे उड़ाया और हल्का-सा हिलाया। 'टन-टन-टन!' की तेज आवाज जंगल में गूँज उठी। आवाज इतनी साफ और मधुर थी कि मोनू खुशी से उछल पड़ा। उसे लगा जैसे उसे कोई अनमाल खजाना मिल गया हो। वह घंटी लेकर एक ऊँचे पेड़ पर चढ़ गया और बार-बार उसे बजाने लगा। हर बार घंटी की आवाज दूर-दूर तक सुनाई देती। नीचे से गुजर रहे जानवर चौंक जाते। हिरण डरकर भागते, खरगोश अपने बिल में घुस जाते और पक्षी उड़ जाते। किसी को समझ नहीं आ रहा था कि यह आवाज कहाँ से आ रही है। कुछ ही दिनों में जंगल में अफवाह फैल गई कि कोई रहस्यमयी भूत जंगल में आ गया है। जब भी घंटी बजती, जानवर घबराकर झंझर-उधर भागने लगते। लोमड़ी ने एक दिन कहा, 'मैंने अपनी जिंदगी में ऐसी आवाज कभी नहीं सुनी। जरूर कोई अदृश्य शक्ति है!' हाथी भी चिंतित हो गया। उसने सब जानवरों को इकट्ठा करके कहा, 'जब तक हमें सच्चाई पता नहीं चलती, हमें सावधान रहना चाहिए.'



लेकिन उसी गाँव में रीना नाम की एक समझदार और साहसी लड़की रहती थी। वह स्कूल में हमेशा सवाल पूछती और हर बात की सच्चाई जानने की कोशिश करती। जब उसने घंटी की कहानी सुनी तो उसे विश्वास नहीं हुआ। उसने सोचा, 'बिना देखे और समझे किसी को भूत कैसे कह सकते हैं? हो सकता है इसके पीछे कोई साधारण कारण हो।'

अगली सुबह रीना ने अपनी माँ से कहा, 'मैं जंगल जाकर देखना चाहती हूँ कि सच्चाई क्या है।' माँ ने पहले मना किया, लेकिन रीना की जिद और समझदारी देखकर उसे अनुमति दे दी। रीना एक मजबूत लाठी लेकर जंगल की ओर चल पड़ी।

जंगल में प्रवेश करते ही अचानक 'टन-टन-टन!' की आवाज गूँजी। उसका दिल जोर से धड़कने लगा, लेकिन वह रुकी नहीं। उसने ध्यान से देखा कि आवाज ऊपर से आ रही है। वह धीरे-धीरे उस दिशा में बढ़ी और एक बड़े पेड़ के नीचे जाकर

खड़ी हो गई। तभी उसने देखा कि पेड़ की ऊँची डाल पर मोनू बंदर घंटी बजा-बजाकर मस्ती कर रहा है। रीना जोर से हँस पड़ी। 'अरे! तो यह है हमारा भूत!' उसकी आवाज सुनकर मोनू घबरा गया और घंटी गिराकर दूसरे पेड़ पर कूद गया। रीना ने घंटी उठा ली और समझ गई कि सारा डर सिर्फ एक गलतफहमी थी। वह गाँव वापस आई और सबको पूरी बात बताई। पहले तो लोगों को विश्वास नहीं हुआ, लेकिन जब वह सबको जंगल ले गई और घंटी दिखाकर सब समझाया, तो सब अपनी बेवजह की घबराहट पर हँसने लगे। गाँव वालों ने रीना की बहादुरी की तारीफ की और कहा, 'अगर तुम सच्चाई जानने नहीं जाती, तो हम आज भी डर में जी रहे होते।' मोनू भी पेड़ पर बैठ यह सब देख रहा था। उसे समझ आ गया कि उसकी शरारत से सब परेशान हो गए थे। उसने तय किया कि अब वह बिना सोचे-समझे ऐसी हरकत नहीं करेगा जिससे दूसरों को नुकसान हो।

कुछ ही समय बाद जंगल में एक और समस्या आ गई। गर्मी बहुत बढ़ गई और पानी के स्रोत सूखने लगे। जानवर प्यास से परेशान थे। पास में एक पुराना कुआँ था, लेकिन उसमें पानी बहुत नीचे था। कोई भी जानवर वहाँ से पानी नहीं निकाल पा रहा था। उसी समय एक प्यासा कौआ वहाँ आया। उसने कुएँ में झाँककर देखा कि थोड़ा-सा पानी नीचे है। उसने सोचा, 'अगर मैं कोशिश करूँ तो शायद पानी ऊपर आ सकता है।' वह आसपास से छोट-छोटे कंकड़ उठाकर कुएँ में डालने लगा। दूसरे जानवर उसका मजाक उड़ाने लगे। लोमड़ी बोली, 'इतने छोट कंकड़ों से क्या होगा?' लेकिन कौआ हार नहीं मान रहा था। धीरे-धीरे कंकड़ों की वजह से पानी ऊपर आने लगा। कुछ देर बाद पानी इतना ऊपर आ गया कि कौआ आराम से अपनी चोंच से पानी पी सका। यह देखकर बाकी जानवर चकित रह गए। उन्हें समझ आया कि धैर्य और समझदारी से बड़ी समस्या भी हल हो सकती है।

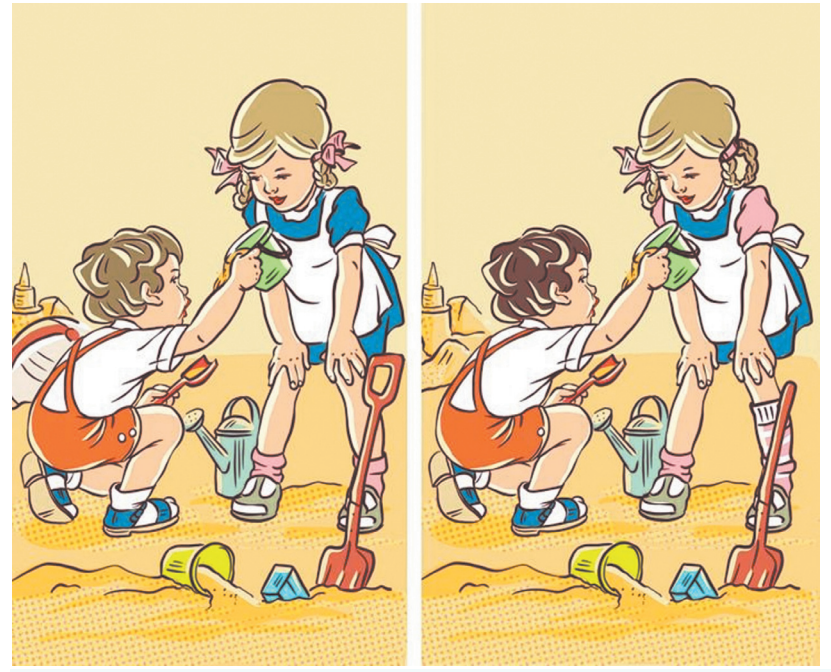
इस घटना के बाद जंगल के जानवरों ने मिलकर पास में एक छोटा तालाब बनाने का निश्चय किया ताकि भविष्य में पानी की कमी न हो। गाँव वाले भी मदद के लिए आए। सबने मिलकर मेहनत की और कुछ ही दिनों में सुंदर तालाब तैयार हो गया। अब जंगल और गाँव दोनों में खुशी लौट आई। लोगों और जानवरों ने दो बड़ी बातें सीखी—पहली, बिना सच्चाई जाने डरना नहीं चाहिए; और दूसरी, कठिन समय में धैर्य और बुद्धि से काम लेना चाहिए।

## सीख:

डर अक्सर अज्ञान से पैदा होता है, और समस्याएँ धैर्य व समझदारी से हल होती हैं।

## अंतर ढूँढो

नीचे दिये गये दोनों चित्र देखने में समान हैं लेकिन उनमें कुछ अंतर हैं जिन्हें आप ढूँढकर निकालें।



कृपया ध्यान से चित्र देखें और अंतर ढूँढें।

## प्रेरक प्रसंग

# श्रीनिवास रामानुजन: संख्याओं के जादूगर

भा रत में एक ऐसे महान गणितज्ञ हुए, जिन्हें लोग 'संख्याओं का जादूगर' कहते हैं उनका नाम था श्रीनिवास रामानुजन। उनका जन्म 22 दिसंबर 1887 को तमिलनाडु के एक छोटे से शहर इरोड में हुआ था। उनका परिवार बहुत साधारण था और आर्थिक स्थिति भी मजबूत नहीं थी, लेकिन उनके सपने बहुत बड़े थे।

रामानुजन बचपन से ही गणित से बहुत प्यार करते थे। जब दूसरे बच्चे खेलते थे, तब वे संख्याओं के साथ खेलते थे। उन्हें किताबों में दिए गए सवाल हल करना ही नहीं, बल्कि खुद नए सवाल बनाना और उनके जवाब ढूँढना भी पसंद था। और उनके जवाब ढूँढना भी पसंद था।



उन्होंने ऐसे-ऐसे सूत्र दिए, जो आज भी वैज्ञानिक और गणितज्ञ उपयोग करते हैं। उनके दिमाग में संख्याएँ जैसे जीवित हो जाती थीं। एक बार उन्होंने एक संख्या 1729 के बारे में कहा कि यह बहुत खास है। बाद में पता चला कि वह संख्या दो अलग-अलग तरीकों से दो घनों (क्यूब्स) के योग के रूप में लिखी जा सकती है। आज भी 1729 को 'रामानुजन संख्या' कहा जाता है।

भारत में रहते हुए उन्हें अपने काम के लिए ज्यादा पहचान नहीं मिली। तब उन्होंने अपने सूत्र इंग्लैंड के प्रसिद्ध गणितज्ञ जी. एच. हार्डी को भेजे। हार्डी उनकी प्रतिभा देखकर हैरान रह गए और उन्हें इंग्लैंड बुलाया। वहाँ उन्होंने मिलकर कई महत्वपूर्ण शोध किए और पूरी दुनिया में भारत का नाम रोशन किया।

लेकिन उनकी पढ़ाई का रास्ता आसान नहीं था। वे गणित में तो बहुत तेज थे, पर दूसरे विषयों में उतनी रुचि नहीं लेते थे। इसी कारण वे परीक्षा में कई बार असफल भी हुए। फिर भी उन्होंने हार नहीं मानी। वे अपने छोटे-से कमरे में बैठकर दिन-रात गणित के नए-नए सूत्र लिखते रहते थे। उनके पास ज्यादा किताबें नहीं थीं, फिर भी उन्होंने अपनी मेहनत और बुद्धि से अनगिनत खोजें कीं।

रामानुजन ने संख्या सिद्धांत, अनंत श्रेणियों और जटिल गणितीय समीकरणों पर काम किया।

रामानुजन की कहानी हमें यह सिखाती है कि अगर आपके अंदर सच्ची लगन है, तो कोई भी कठिनाई आपको रोक नहीं सकती। गरीबी, संसाधनों की कमी या असफलता—इनमें से कोई भी चीज सफलता के रास्ते में दीवार नहीं बन सकती, अगर आप मेहनत करते रहें। आज भारत में हर साल 22 दिसंबर को 'राष्ट्रीय गणित दिवस' मनाया जाता है, ताकि बच्चे गणित से डरें नहीं, बल्कि उसे समझें और उससे दोस्ती करें। रामानुजन का जीवन हमें प्रेरणा देता है कि अपने सपनों पर विश्वास रखें और लगातार प्रयास करते रहें।

## आईना से जुड़े रोचक तथ्य

- आईना प्रकाश को परावर्तित करता है, इसलिए हमें अपनी छवि दिखाई देती है।
- सामान्य आईने के पीछे चाँदी या एल्युमिनियम की परत चढ़ाई जाती है।
- सबसे पहले प्राचीन काल में लोग पानी या चमकदार धातु में अपना चेहरा देखते थे।
- आधुनिक काँच का आईना लगभग 19वीं सदी में प्रचलित हुआ।
- समतल आईना वस्तु की सीधी लेकिन उलटी छवि बनाता है।

- (बाएँ-दाएँ बदली हुई) छवि बनाता है।
- अवतल और उत्तल आईने अलग-अलग प्रकार की छवियाँ बनाते हैं।
- गाड़ियों में लगे साइड मिरर प्रायः उत्तल आईने होते हैं, ताकि ज्यादा क्षेत्र दिखाई दे।
- आईना हमेशा वही दिखाता है जो उसके सामने होता है, वह झुट नहीं बोलता।
- दूरबीन और पेरिस्कोप जैसे उपकरणों में भी आईनों का उपयोग होता है।
- आईना केवल चेहरा देखने के लिए ही नहीं, बल्कि विज्ञान और चिकित्सा में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

प्र दूषण का अर्थ है वातावरण में हानिकारक पदार्थों का मिल जाना, जिससे प्रकृति, मनुष्य और जीव-जंतुओं को नुकसान पहुँचे। आज के समय में प्रदूषण एक गंभीर वैश्विक समस्या बन चुका है। बढ़ती जनसंख्या,

हृदय रोग जैसी समस्याएँ बढ़ती हैं। दूसरा है जल प्रदूषण, जो नदियों, झीलों और तालाबों में गंदगी, रसायन, प्लास्टिक और औद्योगिक कचरे के मिल जाने से होता है। दूषित पानी पीने से हैजा, टायफाइड जैसी बीमारियाँ फैलती हैं और जलीय जीवों का जीवन भी खतरे में पड़

उत्पन्न होता है। अधिक शोर से तनाव, सिरदर्द और सुनने की क्षमता में कमी हो सकती है। इसके अलावा प्रकाश प्रदूषण और रेडियोधर्मी प्रदूषण भी पर्यावरण को

संतुलन पर पड़ता है। इसलिए हमें पर्यावरण संरक्षण के लिए पेड़ लगाने, प्लास्टिक का कम उपयोग करने, स्वच्छ ऊर्जा अपनाने और जागरूकता फैलाने



प्रभावित करते हैं। इन सभी प्रकार के प्रदूषण का सीधा असर मानव स्वास्थ्य और प्राकृतिक

की आवश्यकता है, ताकि आने वाली पीढ़ियों को स्वच्छ और सुरक्षित वातावरण मिल सके।

# धरती पर बढ़ता प्रदूषण

औद्योगिकरण, शहरीकरण और वाहनों की अधिक संख्या इसके मुख्य कारण हैं। प्रदूषण कई प्रकार का होता है। सबसे प्रमुख है वायु प्रदूषण, जो तब होता है जब हवा में धुआँ, धूल, जहरीली गैसों और सूक्ष्म कण मिल जाते हैं। फैक्ट्रियों का धुआँ, वाहनों से निकलने वाली गैसों और कचरा जलाना इसके बड़े कारण हैं। इससे दमा, खांसी, फेफड़ों की बीमारी और

जाता है। भूमि प्रदूषण तब होता है जब जमीन पर प्लास्टिक, कचरा और रासायनिक पदार्थ जमा हो जाते हैं। अत्यधिक कीटनाशकों और उर्वरकों के उपयोग से मिट्टी की उर्वरता घटती है और फसल उत्पादन प्रभावित होता है। ध्वनि प्रदूषण भी एक महत्वपूर्ण समस्या है, जो वाहनों के हॉर्न, लाउडस्पीकर और मशीनों के तेज शोर से

### भूल भुलैया

### कविता मेरा सूरज

सुबह-सुबह जब सूरज आता,  
सोने सा आकाश सजाता,  
किरणों से जग रोशन करता,  
आँधिया रात में दूर भगाता।

चिड़िया गाती, फूल खिलाते,  
नहें बच्चे खेल को जाते,  
मेहनत का संदेश सिखाता,  
हर दिन आगे बढ़ना बताता।

### बूझो तो जानें

- ऐसी कौन-सी चीज है जो पानी पीते ही मर जाती है? **आग** वह क्या है जो बिना पैरों के दौड़ती है और बिना मुँह के बोलती है? **नदी**
- ऐसी कौन-सी चीज है जो जितना खींचो उतनी छोटी होती जाती है? **सिगरेट / बीड़ी**
- ऐसी कौन-सी चीज है जो खुद गीली होती है और दूसरों को सुखाती है? **तौलिया**
- ऐसी कौन-सी चीज है जो हमेशा आती है लेकिन कभी पहुँचती नहीं? **कल (आने वाला कल)**
- ऐसा कौन-सा कमरा है जिसमें न दरवाजा है, न खिड़की? **मशरूम**
- ऐसी कौन-सी चीज है जिसे जितना साफ करो, उतनी काली होती जाती है? **ब्लैकबोर्ड**

### हंसी-ठिटोली

- टीचर: बताओ सबसे तेज़ क्या दौड़ता है? **पप्पू: सर, बिजली!** टीचर: कैसे? **पप्पू: क्योंकि बिल आते ही पापा दौड़ पड़ते हैं!**
- मम्मी: पढ़ाई कर ली? **बेटा: हाँ मम्मी, मोबाइल 100% चार्ज कर लिया!**
- टीचर: अगर तुम्हारे पास 5 आम हैं और 2 खा लिए, तो कितने बचे? **गोलू: 5!** टीचर: कैसे? **गोलू: क्योंकि मैं किसी को नहीं दूँगा!**
- पापा: इतने नंबर क्यों कम आए? **बेटा: पापा, सबाल ही गलत थे!**
- दोस्त: होमवर्क किया? **दूसरा: नहीं, आज तो काँपी भी छुट्टी पर है!**
- टीचर: बताओ, चाँद दिन में क्यों नहीं दिखता? **छात्र: क्योंकि वो भी छुट्टी पर होता है!**

### बिंदु मिलाओ

### रंग भरो

बच्चों अपनी कहानियाँ, कविताएँ, पेंटिंग्स, लेख, रचनाएँ आदि bhopalnav@gmail.com पर भेजें।